International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11 November- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारतीय गणतंत्र के समक्ष वर्तमान चुनौतियां

डॉ.रमेश चंद बैरवा
सह आचार्य,राजनीति विज्ञान,
बाबू शोभाराम राजकीय महाविद्यालय,अलवर

भारतीय गणतंत्र विषमता,भेदभाव एवं वैमनस्य की चुनौतियों से बुरी तरह घिर गया है। भारत में तंत्र गणविहीन सा हो गया है। जनतंत्र तेजी से धनतंत्र में तब्दील हो गया है। राजनीति में जातिबल एवं बाहुबल का भी बोलबाला है। भारत में गणतंत्र की मजबूती के लिए स्वतंत्रता,समानता,बंधुत्व,न्याय,लोकतंत्र,धर्मनिरपेक्षता,समाजवाद एवं स्वतंत्र विदेशनीति के संवैधानिक मूल्यों का संवर्धन बहुत जरूरी है लेकिन शासकों के साम्राज्यवाद,सामंतवाद एवं जाति,सम्प्रदाय परस्त रवैये के कारण इन संवैधानिक मूल्यों की घोर अनदेखी होती रही है। राजनीतिक निरंकुशता बढ़ती गई इनसे गणतंत्र कमजोर हुआ है।

संविधान लागू हुए 73 साल से ज्यादा हो गए हैं। संविधान तो औपचारिक तौर पर बहुत अच्छा है,लेकिन आज़ादी के बाद से 1990 तक भारत में आर्थिक विकास की जो रणनीति लागू की गई,वह सरकार संचालित 'राज्य पूंजीवाद' की नीति थी। हालांकि लोककल्याण को भी स्थान दिया गया। गरीबी हटाने व समाजवाद की भी बातें खूब हुईं। फिर भी आर्थिक विषमता बढ़ती ही गई। एक किस्म का "बुर्जुआ सोशलिज्म" ही पनपा। 1991 से आर्थिक सुधार के नाम लागू की गई बाजारवादी नीतियों से आधुनिक तकनीक एवं संचार के साधनों के उपयोग से आर्थिक वृद्धि दर तो तेज हुई लेकिन यह वृद्धि दर असमान व असंतुलित रही। विषमता,बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार ही ज्यादा बढ़ा। शिक्षा एवं स्वास्थ्य का व्यावसायीकरण बढ़ा। आमजन के लिए शिक्षा व स्वास्थ्य महंगी होती गई। कृषि क्षेत्र में सरकारी निवेश में कटौती किये जाने से खेती का संकट गहराता गया। खेती घाटे का व्यवसाय होने के कारण एवं कर्ज में डूब जाने के कारण लाखों किसान आत्महत्या कर चुके हैं।

अच्छे दिन लाने का वादा कर सत्ता में आई केंद्र सरकार ने मजदूर विरोधी और किसान विरोधी कानून थोप दिए। इसीलिए अन्नदाता किसान को मजबूरन सड़कों पर आना पड़ा। जन विरोधी 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' को भी मनमाने तरीके से लागू किया जा रहा है। इस नीति का छात्र,शिक्षक एवं अभिभावक वर्ग कड़ा विरोध कर रहा है। कारपोरेट परस्त नीतियों से पर्यावरण का भी भारी नुकसान हुआ है। अपराध भी बढ़े। जाति,जेंडर एवं धर्म के नाम पर भेदभाव,वैमनस्य व हिंसा भी बढ़ी है। सांप्रदायिकता बढ़ी है। राजनीति में धनबल हावी हो जाने से गणतंत्र भी तेजी से कमजोर होता गया।

हम आजादी का अमृत महोत्सव भी मना रहे हैं,हकीकत यह है कि आज भी हम समतामूलक भारत तो नहीं बना पाए। भारत विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था है। लेकिन मानव विकास सूचकांक में इंडिया 131वें पायदान पर है।। ग्लोबल हंगर इंडेक्स की 117 देशों की सूची में भारत का स्थान 101वां

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11 November- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है। वर्ल्ड इकोनामिक फोरम की 'ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2022' के अनुसार लैंगिक समानता की दृष्टि से भारत का स्थान 146 देशों की सूची में 135वां है। वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स की 180 देशों की सूची में 2021 में इंडिया का स्थान 142वां है। डेमोक्रेसी इंडेक्स में 167 देशों की सूची में भारत का स्थान 53वां है।

आर्थिक विषमता,बीमारी एवं गरीबी की वैश्विक चुनौतियों पर तथ्यपरक,विश्वनीय अध्ययन के लिए प्रसिद्ध सामाजिक संस्था 'ऑक्सफैम' की 2022 की रिपोर्ट बताती है कि आर्थिक विषमता तेजी से बढ़ी है। भारत की सबसे अमीर एक प्रतिशत आबादी अब तक 40 प्रतिशत दौलत की मालिक बन चुकी है। दरिद्रीकरण इतना तेजी से बढ़ा है कि नीचे की 50 प्रतिशत आबादी के पास सिर्फ 3 प्रतिशत दौलत ही रह गई है। कोरोना महामारी में भी अरबपतियों की दौलत 121 प्रतिशत बढ़ी है। भुखमरी के शिकार लोगों की संख्या 19 करोड़ से बढ़कर 35 करोड़ पहुंच चुकी है। करोड़ों लोग शिक्षा एवं स्वास्थ्य की बुनियादी सेवाओं से वंचित हैं। बेरोजगारी बढ़ी है। हरियाणा में 37 प्रतिशत के बाद 28 प्रतिशत के साथ बेरोजगारी में राजस्थान का स्थान दूसरा है। देश में 40 प्रतिशत से ज्यादा शिक्षित युवा बेरोजगार हैं। बेरोजगारी के चलते युवा आत्महत्या करने पर आमादा है। कच्चा तेल सस्ता है फिर भी पेट्रोल, डीजल,रसोई गैस महंगे हैं।

जाति,जेंडर आधारित भेदभाव आज भी कायम है। धर्म के नाम बढ़ती नफरत और हिंसा से हम सब चिंतित हैं। दलित और महिलाओं पर हमले आज भी हो रहे हैं। एनसीआरबी के आंकड़ों के विश्लेषण के मुताबिक वर्ष 2001 से 2021 के 20 वर्ष में दलितों के खिलाफ अपराध और अत्याचारों में 51 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। देश में प्रतिदिन 140 दलित उत्पीड़न के शिकार होते हैं। प्रतिदिन 3 दलितों की हत्या होती है। प्रतिदिन 11 दलित महिलाओं के साथ दुष्कर्म होते हैं। पिछले 10 वर्षों में महिला उत्पीड़न के मामलों में राजस्थान में 93 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि हुई है।

संविधान के मूल्यों को साकार रूप देने के लिए इस गणतंत्र दिवस के अवसर पर आइए नागरिक कर्तव्य निभाते हुए "हम लोग" संकल्प लें कि विषमता,बेरोजगारी,भेदभाव और वैमनस्य की पोषक नीतियों के खिलाफ एकजुट होंगे। राजनीति में धनबल का विरोध करेंगे। राजनीतिक और कानूनी ही नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता के लिए आवाज उठाएंगे। राजनीति में तानाशाही प्रवृतियों का प्रतिरोध करेंगे। समाज में नफरत और हिंसा का विरोध कर सद्भाव और सहयोग को बढ़ावा देंगे। गणतंत्र को सच्चे जनतंत्र की खातिर बचाए जाने के लिए यह बेहद जरूरी है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11 November- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ सूची:

1.UNDP, Human Development Report, 2022

2. वर्ल्ड इकोनामिक फोरम, 'ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2022

3.Oxfam International Report 2022

4. NCRB Report, Crime in India 2021

5.Subhash C Kashyap,Constitution of India, NBT 2021